जंग-ए-बदर (भाग 1): बे-सरोसामानी और युद्ध की तैयारी | इस्लाम का इतिहास

हिजरत का दूसरा साल

बे-सरोसामानी

जब रसूलुल्लाह ﷺ को पूरा विश्वास हो गया कि सभी सहाबा-ए-किराम (रज़ि.) अल्लाह की राह में जंग के लिए तैयार हैं, तब आपने आगे बढ़ने का फैसला किया। उस समय इस्लामी लश्कर की कुल संख्या **310, 312 या 313** बताई जाती है।

जब मदीना से बाहर निकलकर सेना की समीक्षा की गई तो पता चला कि कुछ कम उम्र के लड़के भी लश्कर में शामिल हो गए हैं। चूँकि वे युद्ध के योग्य नहीं थे, इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें वापस लौटने का आदेश दिया। हालांकि कुछ नौजवानों ने बहुत आग्रह किया और अपनी बहादुरी साबित करने के बाद उन्हें लश्कर में रहने की अनुमति मिल गई।

इस्लामी सेना के सीमित संसाधन

उस समय मुसलमानों के पास युद्ध के लिए बहुत कम साधन थे।

- पूरी सेना में केवल **दो घोड़े** थे।
- एक घोड़े पर **हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि.)** और दूसरे पर **हज़रत मिक़दाद (रज़ि.)** सवार थे।
- कुल **70 ऊँट** थे।
- एक-एक ऊँट पर तीन-तीन और चार-चार व्यक्ति बारी-बारी से सवार होते थे।
- **रसूलुल्लाह** ﷺभी जिस ऊँट पर सवार थे, उसी पर दो अन्य सहाबा भी साथ सफर कर रहे थे।
- कई सहाबा पूरा रास्ता पैदल चले।

यह दृश्य बताता है कि मुसलमानों की ताकत हथियारों में नहीं, बल्कि ईमान और अल्लाह पर भरोसे में थी।

मैदान-ए-बदर में पहुंचना

इस्लामी लश्कर जब **बदर** के मैदान में पहुँचा तो देखा कि क़ुरैश पहले ही ऊँचे स्थान पर अपने डेरा डाल चुके हैं।

मुसलमानों को नीचे की रेतीली जगह पर ठहरना पड़ा। हालांकि अल्लाह की मदद से बद्र के पानी के चश्मों पर मुसलमानों का नियंत्रण हो गया।

रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने साथियों को आदेश दिया:

"यदि क़ुरैश का कोई व्यक्ति पानी लेने आए तो उसे मत रोको, उसे पानी लेने दो।"

यह इस्लाम की उच्च नैतिकता और इंसानियत का महान उदाहरण था।

रसूलुल्लाह ﷺ के लिए एक छोटा सा छप्पर

सहाबा-ए-किराम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह ﷺ के लिए खजूर की शाखाओं से एक छोटी सी झोंपड़ी (साइबान) तैयार की।

यहीं पर आप ﷺ अल्लाह की इबादत करते, दुआ करते और पूरी उम्मत के लिए मदद मांगते रहे।

मुसलमानों और क़ुरैश की तुलना

यदि दोनों सेनाओं की तुलना की जाए तो अंतर बहुत बड़ा था।

मुसलमान

- कुल लगभग 313 व्यक्ति
- केवल 2 घोड़े
- 70 ऊँट
- हथियारों की भारी कमी
- अधिकांश लोग आर्थिक रूप से कमजोर
- कई लोग भूख और कठिन परिस्थितियों से गुजर रहे थे
- सभी के पास पूरे हथियार भी नहीं थे

क़ुरैश

- लगभग 1000 सैनिक
- 300 घोड़े

- 700 ऊँट
- पूरी युद्ध तैयारी
- मज़बूत कवच
- अनुभवी योद्धा
- पर्याप्त हथियार और रसद

किसी सहाबी के पास तलवार थी तो भाला नहीं, किसी के पास भाला था तो धनुष नहीं। इसके बावजूद किसी का हौसला कम नहीं हुआ।

दुश्मन ने की जासूसी

क़ुरैश ने अपनी सेना की ओर से **उमैर बिन वहब जमही** को मुसलमानों की संख्या पता लगाने के लिए भेजा।

उन्होंने लौटकर बताया:

"मुसलमानों की संख्या लगभग 310 है और उनके पास केवल दो घुड़सवार हैं।"

जब यह रिपोर्ट क़ुरैश के सरदार **उत्बा बिन रबीआ** ने सुनी तो उसने कहा:

"इतने कम लोगों से लड़ने की आवश्यकता नहीं है। बिना युद्ध किए वापस लौट जाना ही बेहतर होगा।"

लेकिन **अबू जहल** अपने घमंड में चूर था। उसने कहा कि मुसलमानों को पूरी तरह समाप्त कर देना चाहिए।

इसी अहंकार ने क़ुरैश को इतिहास की सबसे बड़ी हार की ओर धकेल दिया।

जंग का आगाज़

आखिरकार **17 रमज़ान, 2 हिजरी** को बद्र के मैदान में युद्ध का दिन आ गया।

युद्ध शुरू होने से पहले रसूलुल्लाह ﷺ अपने छोटे से छप्पर में तशरीफ ले गए और अल्लाह तआला के सामने अत्यंत विनम्रता और आँसुओं के साथ दुआ करने लगे।

आप ﷺ ने अर्ज़ किया:

"ऐ अल्लाह! यदि आज ईमान वालों की यह छोटी-सी जमाअत नष्ट हो गई, तो धरती पर तेरी इबादत करने वाला कोई नहीं बचेगा।"

दुआ के बाद आपने दो रकअत नमाज़ अदा की।

अल्लाह की ओर से विजय की खुशखबरी

कुछ देर बाद रसूलुल्लाह ﷺ पर हल्की-सी ऊँघ (ग़नूदगी) की अवस्था आई।

जब आप ﷺ बाहर निकले तो आपके चेहरे पर मुस्कान थी।

आप ﷺ ने सहाबा से फरमाया:

"क़ुरैश की सेना पराजित होगी और वे पीठ फेरकर भागेंगे।"

फिर आपने क़ुरआन की यह आयत सुनाई:

"जल्द ही यह सेना पराजित होगी और पीठ फेरकर भाग जाएगी।"
(सूरह अल-क़मर: 45-46)

युद्ध से पहले अंतिम निर्देश

रसूलुल्लाह ﷺ ने मुसलमानों को स्पष्ट आदेश दिया:

- पहले हमला मत करना।
- अनुशासन बनाए रखना।
- अल्लाह पर पूरा भरोसा रखना।
- एकजुट रहना।

उस समय मुस्लिम सेना में लगभग **80 से अधिक मुहाजिर** थे, जबकि शेष सभी **अंसार** थे। अंसार में औस और ख़ज़राज दोनों कबीलों के लोग शामिल थे।

दोनों सेनाएँ आमने-सामने खड़ी हो गईं।

रसूलुल्लाह ﷺ अपने हाथ में एक तीर लिए हुए स्वयं सैनिकों की पंक्तियाँ सीधी कर रहे थे, ताकि युद्ध अनुशासन और व्यवस्था के साथ लड़ा जाए।

भाग 1 का निष्कर्ष

बदर की लड़ाई शुरू होने से पहले मुसलमानों के पास न पर्याप्त हथियार थे, न अधिक सैनिक और न ही युद्ध के साधन। इसके बावजूद उनका विश्वास अटूट था। दूसरी ओर क़ुरैश संख्या, हथियार और घमंड में बहुत आगे थे।

इतिहास गवाह है कि निर्णायक विजय केवल संसाधनों से नहीं, बल्कि ईमान, धैर्य, अनुशासन और अल्लाह पर भरोसे से मिलती है।

(अगले भाग में: जंग का पहला मुकाबला, हज़रत हमज़ा (रज़ि.), हज़रत अली (रज़ि.), हज़रत उबैदा (रज़ि.) की मुबारज़त, सहाबा की बहादुरी और जंग-ए-बदर का मुख्य घटनाक्रम।)

जंग-ए-बदर (भाग 2): युद्ध का आगाज़, मुबारज़त और सहाबा-ए-किराम की बहादुरी

युद्ध का पहला मुकाबला (मुबारज़त)

जब दोनों सेनाएँ आमने-सामने खड़ी हो गई तो अरब की परंपरा के अनुसार पहले **मुबारज़त (एकल युद्ध)** का दौर शुरू हुआ।

क़ुरैश की ओर से **उत्बा बिन रबीआ**, उसका भाई **शैबा बिन रबीआ** और उसका बेटा **वलीद बिन उत्बा** मैदान में आए और उन्होंने इस्लामी लश्कर को ललकारा।

उनकी चुनौती स्वीकार करते हुए अंसार के तीन बहादुर सहाबी मैदान में उतरे:

- हज़रत औफ़ (रज़ि.)
- हज़रत मुअव्विज़ (रज़ि.) (अफ़रा के पुत्र)
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.)

उत्बा ने पूछा:

"तुम कौन हो?"

उन्होंने उत्तर दिया:

"हम अंसार अर्थात मदीना के रहने वाले हैं।"

उत्बा ने घमंड भरे स्वर में कहा:

"हमें तुमसे लड़ने की आवश्यकता नहीं है। हमारे बराबर के लोगों को भेजो।"

फिर उसने पुकारकर कहा:

"ऐ मुहम्मद ﷺ! हमारे मुकाबले के लिए हमारी ही क़ौम (क़ुरैश) के लोगों को भेजिए।"

रसूलुल्लाह ﷺ का निर्णय

रसूलुल्लाह ﷺ ने यह बात सुनकर तीन महान सहाबा को मैदान में भेजा।

- हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.)
- हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.)
- हज़रत उबैदा बिन हारिस (रज़ि.)

तीनों बिना किसी संकोच के मैदान में उतर गए।

पहला निर्णायक संघर्ष

पहले मुकाबले में:

- हज़रत हमज़ा (रज़ि.) ने उत्बा को मार गिराया।
- हज़रत अली (रज़ि.) ने वलीद को एक ही वार में समाप्त कर दिया।

उधर हज़रत उबैदा (रज़ि.) और शैबा के बीच भीषण युद्ध हुआ।

दोनों गंभीर रूप से घायल हुए, लेकिन हज़रत उबैदा (रज़ि.) का घाव अधिक गहरा था।

यह देखकर हज़रत हमज़ा (रज़ि.) और हज़रत अली (रज़ि.) तुरंत आगे बढ़े और शैबा को भी मार गिराया।

इसके बाद दोनों हज़रत उबैदा (रज़ि.) को उठाकर रसूलुल्लाह ﷺ की सेवा में लाए। बाद में वे अपने घावों के कारण शहीद हो गए।

आम युद्ध की शुरुआत

एकल युद्ध समाप्त होते ही दोनों सेनाएँ पूरी शक्ति के साथ आमने-सामने आ गईं।

चारों ओर तलवारें चमकने लगीं।

भाले, तीर और तलवारें चलने लगीं।

मुसलमानों ने पूरी बहादुरी, धैर्य और अनुशासन के साथ युद्ध किया।

रसूलुल्लाह ﷺ युद्धभूमि के निकट बने साइबान से पूरी स्थिति पर नज़र रखे हुए थे और समय-समय पर आवश्यक निर्देश देते रहे।

बनू हाशिम के बारे में विशेष आदेश

युद्ध शुरू होने से पहले रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा से फरमाया:

"बनू हाशिम के कुछ लोग मजबूरी में क़ुरैश के साथ आए हैं। वे अपनी इच्छा से युद्ध करने नहीं आए। इसलिए यदि संभव हो तो उनके साथ नरमी बरती जाए।"

आप ﷺ ने विशेष रूप से:

- हज़रत अब्बास (रज़ि.)
- अबुल बख़्तरी

के बारे में भी उन्हें अनावश्यक रूप से नुकसान न पहुँचाने का आदेश दिया।

हज़रत अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) की भावना

यह आदेश सुनकर हज़रत अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने भावावेश में कहा:

"क्या ऐसा हो सकता है कि मैं अपने रिश्तेदारों से लड़ूँ और अब्बास (रज़ि.) को छोड़ दूँ? यदि वे मेरे सामने आए तो मैं उन्हें भी नहीं छोड़ूँगा।"

बाद में उन्हें अपने इन शब्दों पर गहरा पछतावा हुआ और उन्होंने अल्लाह से माफी माँगी।

अबुल बख़्तरी का अंत

युद्ध के दौरान हज़रत मज़ज़र बिन ज़ियाद (रज़ि.) का सामना अबुल बख़्तरी से हुआ।

उन्होंने पहले उसे याद दिलाया:

"हमें तुम्हारे साथ युद्ध न करने का आदेश दिया गया है। तुम हमारे सामने से हट जाओ।"

लेकिन अबुल बख़्तरी अपने एक साथी को बचाने के लिए लड़ने लगा।

इस संघर्ष में वह मारा गया।

उमय्या बिन ख़लफ़ का अंत

उमय्या बिन ख़लफ़ और उसका बेटा अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे।

जाहिलियत के समय हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) और उमय्या के बीच मित्रता थी।

उन्होंने दोनों को अपनी सुरक्षा में लेने का प्रयास किया।

उसी समय हज़रत बिलाल (रज़ि.) की नज़र उमय्या पर पड़ी।

याद रहे कि यही उमय्या मक्का में हज़रत बिलाल (रज़ि.) पर अत्यंत कठोर अत्याचार किया करता था।

हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अंसार के कुछ युवकों को आवाज़ दी।

सभी ने मिलकर उमय्या और उसके बेटे को घेर लिया।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने उन्हें बचाने की बहुत कोशिश की, लेकिन हज़रत बिलाल (रज़ि.) और अन्य सहाबा ने अंततः दोनों को मार दिया।

हज़रत उमैर बिन हमाम (रज़ि.) की शहादत

युद्ध के दौरान एक महान घटना घटी।

हज़रत उमैर बिन हमाम अंसारी (रज़ि.) रसूलुल्लाह ﷺ के पास खजूर खा रहे थे।

उन्होंने पूछा:

"यदि मैं अल्लाह की राह में लड़ते हुए शहीद हो जाऊँ तो क्या मुझे तुरंत जन्नत मिलेगी?"

रसूलुल्लाह ﷺ ने उत्तर दिया:

"हाँ।"

यह सुनते ही उन्होंने अपने हाथ की बची हुई खजूरें फेंक दीं और कहा:

"यदि मैं इन्हें खाने तक जीवित रहा तो यह भी बहुत लंबी जिंदगी होगी।"

फिर उन्होंने तलवार उठाई, दुश्मन पर टूट पड़े और बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गए।

उनकी यह कुर्बानी इस्लामी इतिहास की सबसे प्रेरणादायक घटनाओं में गिनी जाती है।

अल्लाह की मदद

जब युद्ध अपने चरम पर था, तब रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़मीन से एक मुट्ठी मिट्टी उठाई।

आप ﷺ ने उस पर दुआ पढ़ी और उसे क़ुरैश की ओर फेंक दिया।

अल्लाह तआला की मदद से दुश्मन की पंक्तियों में भय और भ्रम फैल गया।

यहीं से युद्ध का रुख मुसलमानों के पक्ष में बदलना शुरू हो गया।

भाग 2 का निष्कर्ष

जंग-ए-बदर का दूसरा चरण मुसलमानों की अद्वितीय बहादुरी, रसूलुल्लाह ﷺ की दूरदर्शिता और अल्लाह पर उनके अटूट भरोसे का जीवंत प्रमाण है। एक ओर संख्या और हथियारों में शक्तिशाली क़ुरैश थे, जबकि दूसरी ओर ईमान, सब्र और अल्लाह की मदद पर भरोसा रखने वाले मुट्ठीभर मुसलमान।

अगले भाग में: अबू जहल का अंत, मुसलमानों की ऐतिहासिक विजय, शहीदों का विवरण, क़ैदियों का मामला, माल-ए-गनीमत की तक़सीम और मदीना वापसी का पूरा घटनाक्रम।

जंग-ए-बदर (भाग 3): अबू जहल का अंत, इस्लाम की ऐतिहासिक विजय और मदीना वापसी

अबू जहल का घायल होना

जब युद्ध अपने चरम पर था, तब अंसार के युवा सहाबी **हज़रत मुआज़ बिन अम्र (रज़ि.)** का सामना क़ुरैश के सबसे बड़े सरदार **अबू जहल** से हुआ। अबू जहल मजबूत कवच पहने हुए था और पूरी तरह हथियारों से लैस था।

हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने अवसर देखकर उसकी टांग पर ऐसा जोरदार वार किया कि उसका पैर लगभग अलग हो गया।

यह देखकर अबू जहल के पुत्र **इकरिमा बिन अबू जहल** ने हज़रत मुआज़ (रज़ि.) पर हमला किया और उनके कंधे के पास बायाँ हाथ लगभग काट दिया। हाथ केवल चमड़ी के सहारे लटक रहा था।

इसके बावजूद हज़रत मुआज़ (रज़ि.) पूरे साहस के साथ लड़ते रहे। जब लटकता हुआ हाथ युद्ध में बाधा बनने लगा तो उन्होंने उसे अपने पैर के नीचे दबाकर अलग कर दिया और फिर उसी जोश से लड़ाई जारी रखी।

अबू जहल का अंतिम समय

इसके बाद अंसार के एक अन्य युवा सहाबी **हज़रत मुअव्विज़ बिन अफ़रा (रज़ि.)** ने भी अबू जहल पर हमला किया और उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया।

कुछ ही समय बाद क़ुरैश की सेना मैदान छोड़कर भागने लगी।

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया:

"देखो, अबू जहल का क्या हुआ? उसकी तलाश करो।"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और अबू जहल

हज़रत **अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.)** शहीद और घायल लोगों के बीच अबू जहल को खोजते हुए पहुँचे। उन्होंने देखा कि वह अभी अंतिम साँसें ले रहा था।

वे उसके सीने पर बैठ गए और कहा:

"ऐ अल्लाह के दुश्मन! देख, आज अल्लाह ने तुझे कितना अपमानित किया है।"

अबू जहल ने पूछा:

"बताओ, आज किसकी जीत हुई?"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने उत्तर दिया:

"अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ और मुसलमानों को विजय दी है।"

जब वे उसका सिर काटने लगे तो अबू जहल ने घमंड में कहा:

"मेरी गर्दन ऊँची जगह से काटना ताकि लोगों को लगे कि किसी बड़े सरदार का सिर है।"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने उसका सिर काटकर रसूलुल्लाह ﷺ की सेवा में प्रस्तुत किया।

अबू जहल का सिर देखकर रसूलुल्लाह ﷺ ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया।

जंग-ए-बदर में मुसलमानों की विजय

अल्लाह की मदद से मुसलमानों को ऐतिहासिक विजय प्राप्त हुई।

इस युद्ध में:

- **क़ुरैश के 70 लोग मारे गए।**
- **70 लोग क़ैदी बनाए गए।**

दूसरी ओर मुसलमानों के **14 सहाबी शहीद** हुए।

इनमें:

- **6 मुहाजिर**
- **8 अंसार**

शामिल थे।

शहीदों का सम्मान

युद्ध समाप्त होने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने शहीद सहाबा को पूरे सम्मान के साथ दफन कराया।

मुसलमानों ने अपने शहीद भाइयों के लिए दुआ की और उनकी कुर्बानी को इस्लाम की अमर विरासत माना।

क़ुरैश के मृतकों का दफन

मक्का के जो प्रमुख सरदार युद्ध में मारे गए थे, उनकी लाशों को एक बड़े गड्ढे (या कुएँ) में डालकर मिट्टी से ढक दिया गया।

हालाँकि **उमय्या बिन ख़लफ़** का शरीर बुरी तरह क्षत-विक्षत हो चुका था, इसलिए उसे वहीं मिट्टी डालकर ढक दिया गया।

क़ुरैश के लोग इतनी घबराहट में भागे कि अपने सेनापति अबू जहल को भी मैदान में छोड़ गए।

मक्का में मातम

जंग-ए-बदर में क़ुरैश के अनेक बड़े नेता मारे गए।

जब पराजित सेना मक्का पहुँची तो लगभग हर घर में शोक छा गया। जिन सरदारों पर मक्का को गर्व था, वे अधिकांश युद्ध में मारे जा चुके थे।

माल-ए-गनीमत की व्यवस्था

रसूलुल्लाह ﷺ ने युद्ध में प्राप्त समस्त **माल-ए-गनीमत** को एक स्थान पर एकत्र कराया।

उसकी देखरेख की जिम्मेदारी **हज़रत अब्दुल्लाह बिन काब (रज़ि.)** को सौंपी गई।

इसके बाद:

- **हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.)**
- **हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि.)**

को मदीना भेजा गया ताकि वे लोगों को विजय का शुभ समाचार दें।

मदीना में खुशी और एक दुखद घटना

हज़रत **उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.)** बयान करते हैं कि बद्र की विजय का समाचार उस समय मदीना पहुँचा जब वे **हज़रत रुकय्या (रज़ि.)**, जो रसूलुल्लाह ﷺ की पुत्री और हज़रत उस्मान (रज़ि.) की पत्नी थीं, के जनाज़े में शामिल थे।

इस प्रकार विजय की खुशी और परिवार के गम का यह क्षण एक साथ आया।

माल-ए-गनीमत का वितरण

मदीना लौटते समय **सफ़रा** नामक स्थान पर अल्लाह के आदेश के अनुसार माल-ए-गनीमत को बराबर-बराबर बाँटा गया।

यह इस्लामी न्याय और समानता का उत्कृष्ट उदाहरण था।

दो युद्ध अपराधियों को दंड

वापसी के मार्ग में दो ऐसे क़ैदियों को दंड दिया गया जो इस्लाम और रसूलुल्लाह ﷺ के कट्टर शत्रु थे।

वे थे:

- **नज़र बिन हारिस**
- **उक़्बा बिन अबी मुईत**

दोनों ने वर्षों तक मुसलमानों पर अत्याचार किए थे और इस्लाम के विरुद्ध गंभीर अपराधों में शामिल थे। इसलिए उन्हें रास्ते में मृत्युदंड दिया गया।

मदीना वापसी

रसूलुल्लाह ﷺ अपने साथियों के साथ तेज़ी से मदीना लौटे।

क़ैदियों और उनकी सुरक्षा के लिए नियुक्त दल बाद में मदीना पहुँचा।

इस प्रकार बद्र की ऐतिहासिक विजय के साथ इस्लामी राज्य की प्रतिष्ठा पूरे अरब में स्थापित हो गई।

जंग-ए-बदर से मिलने वाले महत्वपूर्ण सबक

- अल्लाह पर सच्चा भरोसा सबसे बड़ी ताकत है।
- संख्या और हथियार सफलता की गारंटी नहीं होते।
- ईमान, सब्र और अनुशासन विजय का आधार हैं।
- रसूलुल्लाह ﷺ हर निर्णय में न्याय और दया का ध्यान रखते थे।
- कठिन परिस्थितियों में भी मुसलमानों ने धैर्य और एकता का परिचय दिया।

कठिन शब्दों के अर्थ

शब्द	अर्थ
बे-सरोसामानी	साधनों और संसाधनों की कमी
मुबारज़त	युद्ध से पहले दो योद्धाओं का आमने-सामने मुकाबला
लश्कर	सेना
ग़नूदगी	हल्की नींद या ऊँघ
साइबान	छप्पर या अस्थायी आश्रय

शब्द	अर्थ
माल-ए-गनीमत	युद्ध में प्राप्त संपत्ति
क़ैदी	बंदी बनाया गया व्यक्ति
शहीद	अल्लाह की राह में प्राण देने वाला
फ़तह	विजय
मुहाजिर	मक्का से हिजरत करके मदीना आने वाले मुसलमान
अंसार	मदीना के मुसलमान जिन्होंने मुहाजिरों की सहायता की
घमंड	अहंकार
अनुशासन	नियमों का पालन करना

निष्कर्ष

जंग-ए-बदर केवल इस्लाम की पहली बड़ी सैन्य विजय नहीं थी, बल्कि यह ईमान, सब्र, त्याग और अल्लाह पर अटूट भरोसे की सबसे महान मिसाल भी है। इस युद्ध ने यह सिद्ध कर दिया कि जब उद्देश्य सत्य हो, नेतृत्व न्यायपूर्ण हो और भरोसा अल्लाह पर हो, तब सीमित संसाधनों के बावजूद बड़ी से बड़ी शक्ति पर विजय प्राप्त की जा सकती है।